मॉड्यूल
12

सामाजिक विज्ञान का शिक्षणशास्त्र
(उच्च प्राथमिक स्तर)

प्राथमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान का क्षेत्र सामान्य शिक्षा का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। इस विषय में देश-काल और संस्थानों के परे प्राकृतिक और सामाजिक पर्यावरण के साथ अन्योन्य क्रिया की व्यापक समझ समाहित है। यह समझना ज़रूरी है कि सामाजिक विज्ञान, वैज्ञानिक अनुसंधान के तरीकों में योगदान दें, जो कि प्राकृतिक और भौतिक विज्ञान से अलग हैं। व्यक्तिगत व सामाजिक कल्याण पर प्रभाव डालने वाले सामाजिक मुद्दों के बारे में गंभीरता से विचार करने की बच्चों की क्षमता में बढ़ोत्तरी करते हुए, सामाजिक विज्ञान शिक्षण मानवीय मूल्यों, जैसे— स्वतंत्रता, विश्वास और विविधता के प्रति सम्मान को बढ़ावा देता है। (नेशनल फोकस ग्रुप पेपर ऑन टीचिंग ऑफ़ साइंसेज़, एन.एफ.जी.टी.एस.एस. 2005)। साथ ही यह बच्चों को सहानुभूति, समानता, स्वतंत्रता, न्याय, बंधुत्व, गरिमा, बहुलता और सद्भाव जैसे मूल्य भी सिखाता है। सामाजिक विज्ञान के प्रत्येक अनुशासन में घटनाओं, परिघटनाओं और प्रक्रियाओं के कार्य-कारण संबंधों को तार्किक एवं तर्कसंगत दृष्टिकोण से समझने, विश्लेषण करने, मूल्यांकन करने और उसका अनुप्रयोग करके निष्कर्ष तक पहुँचने के लिए परीक्षण का अपना तरीका है।

सामाजिक विज्ञानों के शिक्षण और अधिगम में पर्यावरण, शांति व अहिंसा से संबंधित मूल्यों और अनुसूचित जाति, जनजाति, जेंडर एवं अल्पसंख्यकों से संबंधित मुद्दों को शिक्षण में प्रभावी ढंग से एकीकृत करने का प्रयास किया जाता है। *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा* (एन.सी.एफ. 2005) और एन.एफ.जी.टी.एस.एस. 2005 के एक भाग के रूप में सामाजिक विज्ञान की शैक्षणिक प्रक्रियाएँ एक ज्ञानमीमांसीय बदलाव की बात करती हैं।

क्रम संख्या	से	की ओर
1.	सूचना के एकमात्र स्रोत के रूप में पाठ्यपुस्तक	एक विशेष तरीके से मुद्दों को समझने के सुझाव के रूप में पाठ्यपुस्तक
2.	एक बंद बॉक्स के रूप में पाठ्यपुस्तक	एक गतिशील दस्तावेज़ के रूप में पाठ्यपुस्तक
3.	मुख्यधारा के अतीत का लेखा-जोखा	अधिक समूहों और क्षेत्रों को शामिल किया गया

यह कल्पना की गई है कि सामाजिक विज्ञान में शैक्षणिक प्रक्रियाएँ, बच्चों में अपने विचारों और अनुभवों को साझा करने, दूसरों के विचारों को धैर्यपूर्वक सुनने, तथ्यों व अनुभवों का गंभीर रूप से मूल्यांकन करने और इसे अपनी खुद की भाषा में व्यक्त करने के लिए बच्चों में जिज्ञासा और रुचि पैदा करेंगी। यह शिक्षण बच्चों को उन अलग-अलग अवधारणाओं से परिचित कराता है, जिन्हें वे अपने स्वयं के अनुभवों से उसी के संदर्भ में समझेंगे। ज्ञान के एक सुगमकर्ता (फैसिलिटेटर) के रूप में आप सकारात्मक चर्चाओं में

भाग लेने को प्रोत्साहित करने, वाद-विवाद आयोजित करने, विभिन्न प्रकार के स्रोतों से पढ़ने के लिए बच्चों को प्रेरित करने, सहायक तकनीक आदि का उपयोग करते हुए उनकी शिक्षा में हो रहे नवीनतम विकास के बारे में सूचित करने में मदद कर सकते हैं। विषय को पढ़ाते हुए जिन चुनौतियों से आपका सामना हो सकता है, वे शिक्षार्थी की भाषा में मूल सिद्धांत के स्पष्टीकरण से संबंधित हो सकती हैं। आप उन्हें बेहतर ढंग से समझाने और स्पष्टीकरण के लिए, विभिन्न शिक्षण-अधिगम सामग्रियों या द्विभाषी/बहुभाषी पद्धति का उपयोग कर सकते हैं।

अधिगम के उद्देश्य

- निरंतरता और परिवर्तन की घटनाओं को समझने के लिए सामाजिक विज्ञान की प्रासंगिकता को समझना।
- प्राकृतिक और सामाजिक वातावरण के साथ अंतर्संबंध स्थापित करने में विषय की प्रासंगिकता को पहचानना।
- भारत के संविधान में निहित मूल्यों की सराहना करना, जैसे— न्याय, स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व तथा राष्ट्र की एकता व अखंडता और एक समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष एवं लोकतांत्रिक समाज का निर्माण।
- प्राकृतिक और सामाजिक प्रक्रियाओं, घटनाओं और समाज के विभिन्न वर्गों पर उनके प्रभावों के संदर्भ में कार्य-कारण संबंध का वर्गीकरण और तुलना करना।
- विभिन्न अवधारणाओं, जैसे— विविधता में एकता, लोकतंत्र, विकास और हमारी संस्कृति एवं कला को समृद्ध करने वाली ताकतों और इसके विविध कारकों की व्याख्या करना।
- प्राकृतिक और सामाजिक परिघटनाओं को समझने में तरीकों की बहुलता को विकसित करने की आवश्यकता पर चर्चा करना।
- विविधता, जेंडर भेदभाव, विशेष आवश्यकता समूह वाले बच्चे (चिल्ड्रन विद स्पेशल नीड्स) और समाज में भेदभाव का शिकार लोगों के प्रति जागरूकता और संवेदनशीलता पैदा करना।

विषय के बारे में संक्षिप्त परिचय

उच्च प्राथमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान के अंतर्गत भूगोल, इतिहास, राजनीति विज्ञान और अर्थशास्त्र जैसे विषय आते हैं।

भूगोल

यह विषय विभिन्न क्षेत्रों और देशों की एक-दूसरे पर निर्भरता को समझने की अवधारणा को बढ़ावा देने का प्रयास करता है। एक विषय के रूप में भूगोल के तहत उच्च प्राथमिक स्तर के बच्चों को मानव जाति और जीवन के अन्य रूपों के आवास के रूप में धरती के बारे में पढ़ाया जाएगा। उन्हें वैश्विक संदर्भ में अपने स्वयं के क्षेत्र, राज्य और देश का अध्ययन करने

के लिए प्रेरित किया जाएगा। साथ ही आर्थिक संसाधनों के वैश्विक वितरण, जेंडर, भेदभाव के शिकार वर्ग और पर्यावरण जैसे समकालीन मुद्दों पर भी बल दिया जाएगा। इसके अलावा उनका परिचय वैश्वीकरण की अविरत प्रक्रिया से भी कराया जाएगा।

इतिहास

उच्च प्राथमिक स्तर पर एक विषय के रूप में इतिहास, प्रागैतिहासिक काल से वर्तमान समय तक के भारतीय इतिहास का अध्ययन करने पर केंद्रित है। इतिहास की कक्षा छह की पाठ्यपुस्तक में समय का एक समग्र विस्तार निहित है जो मनुष्यों द्वारा शिकार करने और समूह बनाकर रहने से लेकर संस्कृति, विरासत और लोगों के जीवन सहित, प्राचीन काल में साम्राज्यों की स्थापना तक फैला हुआ है। कक्षा सात की पाठ्यपुस्तक में मध्य काल में हुई घटनाएँ निहित हैं और कक्षा आठ की पाठ्यपुस्तक में ईस्ट-इंडिया कंपनी की सत्ता के कायम होने से लेकर स्वतंत्र भारत तक की सामाजिक-आर्थिक और सांस्कृतिक प्रक्रियाओं को शामिल किया गया है। इसका उद्देश्य उचित स्रोतों के साथ प्रत्येक अवधि में हुए विकास के बारे में बच्चों को बताना है। बच्चे बेहतर ढंग से समझ सकें, इसके लिए तथ्यों और घटनाओं को दर्शाने हेतु प्रोत्साहित करने के लिए विभिन्न प्रकार की शिक्षण सहायक सामग्रियों, जैसे— मानचित्र, घटनाक्रमों, केस अध्ययनों से परिचित कराया जाता है और उस समयावधि का विस्तृत अध्ययन कराया जाता है।

सामाजिक और राजनीतिक जीवन

यह विषय भारतीय लोकतंत्र और अर्थव्यवस्था के कार्यकलापों को समझने के लिए महत्वपूर्ण अवधारणाओं और ज्ञान पर केंद्रित है। यहाँ संस्थाओं की वास्तविक कार्यप्रणाली पर ज़ोर दिया गया है, जैसे— पानी, स्वच्छता, सड़क, बिजली आदि सार्वजनिक सुविधाएँ प्रदान करने में सरकार की भूमिका को स्पष्ट करना और उनकी उपलब्धता के बारे में जानना। यह समाज के विभिन्न वर्गों पर प्रभाव डालने वाले राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक कारकों के बीच अंतर्संबंधों का वर्णन करता है। एक विषय के रूप में इसका मुख्य उद्देश्य बच्चों में भारतीय संविधान के आदर्शों को आत्मसात करने, लोकतंत्र और उसके विभागों के कामकाज को जानने के लिए प्रोत्साहित करना है।

विषय में कक्षा विशेष के लिए सीखने के प्रतिफल— एक अवलोकन

उच्च प्राथमिक स्तर की समाप्ति पर शिक्षार्थी सामाजिक विज्ञान में सीखने के प्रतिफलों से पाठ्यचर्या संबंधी निम्नलिखित अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए ज्ञान, कौशल और एक विचार उत्पन्न करने में सक्षम होंगे— यह समझने में कि राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक मुद्दे किस तरह से समय और स्थान के अनुसार उनके दैनिक जीवन को प्रभावित करते हैं; पृथ्वी को मानव व अन्य जीवों के निवास स्थान के रूप में देखने-समझने में अपने स्वयं के स्थानीय क्षेत्र से परिचित होने और विभिन्न क्षेत्रों (स्थानीय से वैश्विक) की एक-दूसरे

पर निर्भरता का एहसास करने में; संसाधनों के स्थानिक वितरण और उनके संरक्षण को समझने में; भारतीय इतिहास के विभिन्न कालखंडों में हुए ऐतिहासिक विकास को समझने में; यह समझने में कि कैसे इतिहासकार विभिन्न प्रकार के स्रोतों का उपयोग करके अतीत का अध्ययन करते हैं; किसी एक स्थान या क्षेत्र के विकास को दूसरे से देखते हुए ऐतिहासिक विविधता को समझने में; भारतीय संविधान के मूल्यों को आत्मसात करने और रोज़मर्रा के जीवन में उनके महत्व को जानने में; भारतीय लोकतंत्र और इसकी संस्थाओं व प्रक्रियाओं की कार्यप्रणाली की, स्थानीय स्तर, राज्य स्तर और केंद्र स्तर पर समझ हासिल करने में; परिवार, बाज़ार और सरकार जैसी व्यवस्थाओं की सामाजिक-आर्थिक भूमिका से परिचित होने में; तथा राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और पर्यावरणीय प्रक्रियाओं में समाज के विभिन्न वर्गों द्वारा दिए जाने वाले योगदान को पहचानने में। इसके अलावा शिक्षार्थी, इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र और राजनीति विज्ञान के दृष्टिकोण से प्राकृतिक आपदा, कृषि और आजीविका जैसी विभिन्न घटनाओं/परिघटनाओं का विश्लेषण करने में सक्षम होंगे।

कक्षा आधारित सीखने के प्रतिफलों को प्राप्त करने हेतु शिक्षणशास्त्र का एक संक्षिप्त विवरण

सुझायी गई शैक्षणिक प्रक्रियाएँ, जिन्हें आप तैयार कर सकते हैं, शिक्षार्थियों को विभिन्न संदर्भों में व्यक्तिगत रूप से, जोड़े के रूप में और समूह में काम करने के अवसर प्रदान कर सकती हैं।

कक्षा	सीखने-सिखाने की प्रस्तावित प्रक्रियाएँ	सीखने के प्रतिफल
छह	• पृथ्वी की गतियों को समझने के लिए चित्रों, मॉडल और दृश्य-श्रव्य सामग्रियों का प्रयोग। • खगोलीय परिघटनाओं, जैसे— तारे, ग्रह, उपग्रह (चाँद), ग्रहण को अपने माता-पिता/शिक्षकों/बड़ों की सहायता से देखकर समझना। • विभिन्न प्रकार के स्रोतों और उनके चित्रों का प्रयोग करना ताकि वे उन्हें देखकर, पढ़कर, समझकर और चर्चा कर यह जान सकें कि इतिहासकारों ने प्राचीन भारत के इतिहास के पुनर्निर्माण के लिए इनकी व्याख्या कैसे की है। • शिकारी-संग्रहकर्ताओं (हंटर-गैदरर्स), खाद्य उत्पादकों, हड़प्पा सभ्यता के इलाकों, जनपदों, महाजनपदों, साम्राज्यों, बुद्ध और महावीर के जीवन से संबंधित स्थानों, कला और वास्तुकला के केंद्रों, भारत के बाहर जिन क्षेत्रों के साथ भारत के संबंध थे, उन महत्वपूर्ण स्थानों, पुरा स्थलों को मानचित्र में अंकित करना।	• अक्षांशों और देशांतरों, जैसे— ध्रुवों, विषुवत वृत्त, कर्क व मकर रेखाओं, भारत के राज्यों/केंद्रशासित प्रदेशों अन्य पड़ोसी देशों को ग्लोब एवं विश्व के मानचित्र पर पहचानते हैं। • अपने आस-पड़ोस का मानचित्र बनाते हैं और उस पर मापक, दिशाएँ तथा अन्य विशेषताओं को रूढ़ चिह्नों की सहायता से दिखाते हैं। • बच्चे विभिन्न प्रकार के स्रोतों (पुरातात्विक, साहित्यिक आदि) को पहचानते हैं और इस अवधि के इतिहास के पुनर्निर्माण में उनके उपयोग का वर्णन करते हैं। • महत्वपूर्ण ऐतिहासिक पुरास्थलों तथा अन्य स्थानों को भारत के एक रूपरेखा मानचित्र पर अंकित करते हैं।

	• विविधता, भेदभाव, सरकार एवं आजीविका की अवधारणाओं पर विचार-विमर्श में भाग लेना। • समाज, स्कूल, परिवार आदि में लोगों के साथ उचित/अनुचित व्यवहार पर ध्यान देना।	• भेदभाव के विभिन्न रूपों को पहचानते हैं और उनकी प्रकृति एवं स्रोत को समझते हैं। • समानता और असमानता के विभिन्न रूपों में अंतर करते हैं और इसके निदान के प्रति सकारात्मक भाव रखते हैं।
सात	• ग्लोब तथा मानचित्र पर ऐतिहासिक स्थानों/राज्यों, जलवायु प्रदेशों और अन्य संसाधनों की स्थिति को ढूँढ़ना। • पृथ्वी की आंतरिक संरचना, विभिन्न स्थलरूपों तथा महासागरीय जल की गतियों को समझने के लिए चित्रों/मॉडलों/दृश्य-श्रव्य सामग्रियों का उपयोग करना। • पुस्तकों/स्थानीय वातावरण में उपलब्ध इतिहास के विभिन्न स्रोतों की पहचान करना, जैसे— पांडुलिपि/नक्शे/चित्र/पेंटिंग, ऐतिहासिक स्मारक/फ़िल्म, जीवनी नाटक, टेली-धारावाहिक, लोक नाट्य आदि में और इनकी व्याख्या कर उस काल विशेष को समझने का प्रयास करना। • नए राजवंशों के उद्भव के साथ परिचित होना और इस समय के दौरान घटी महत्वपूर्ण घटनाओं का पता लगाने के लिए एक घटनाक्रम तैयार करना। • ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्रों में लड़कियों और महिलाओं के जीवन स्तर के बारे में वर्णनात्मक और आलोचनात्मक लेखन से अपने विचारों को व्यक्त करना। • एक बेहतर समाज के लिए काम करने वाली महिलाओं के बारे में मौखिक और लिखित प्रस्तुतियाँ देना।	• पर्यावरण के विभिन्न घटकों तथा उनके पारस्परिक संबंधों का वर्णन करते हैं। • अपने आस-पास के वातावरण में प्रदूषण फैलाने वाले कारकों का विश्लेषण करते हैं और इसे कम करने के उपायों की सूची बनाते हैं। • इतिहास में विभिन्न कालों का अध्ययन करने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले स्रोतों के उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। • मध्यकाल के दौरान एक स्थान पर हुए महत्वपूर्ण ऐतिहासिक बदलावों को दूसरे स्थान पर होने वाले बदलावों के साथ जोड़कर देखते हैं। • भारत के विभिन्न इलाकों से अलग-अलग क्षेत्रों में उपलब्धियाँ हासिल करने वाली महिलाओं को पहचानते हैं। • विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं के योगदान को उपयुक्त उदाहरणों के साथ वर्णित करते हैं।
आठ	• अपने आस-पड़ोस/ज़िले/राज्य में प्रचलित विभिन्न कृषि पद्धतियों के बारे में जानकारी एकत्रित करना तथा किसानों से इनके बारे में बातचीत करना। • प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता तथा उनके संरक्षण एवं अन्य राज्यों/देशों में कृषि की विविध पद्धतियों को समझने के लिए चित्रों/समाचार-पत्रों/दृश्य-श्रव्य संसाधनों का उपयोग करना। • विभिन्न मुद्दों और घटनाओं पर सवाल उठाना, जैसे— 'ईस्ट इंडिया कंपनी ने भारतीय शासकों के बीच विवादों में खुद को शामिल करना क्यों आवश्यक समझा?'	• जंगलों में लगने वाली आग (दावानल), भूस्खलन, औद्योगिक आपदाओं के कारणों और उनके जोखिम को कम करने के उपायों का वर्णन करते हैं। • महत्वपूर्ण खनिजों, जैसे— कोयला तथा खनिज तेल के वितरण क्षेत्रों को विश्व के मानचित्र पर अंकित करते हैं। • ईस्ट इंडिया कंपनी कैसे सबसे प्रभावशाली शक्ति बन गई, यह बताते हैं। • देश के विभिन्न क्षेत्रों में औपनिवेशिक कृषि नीतियों के प्रभाव में अंतर बताते हैं, जैसे— 'नील विद्रोह'।

	• ऐतिहासिक महत्व के स्थानों की यात्राएँ करना, विशेष रूप से उन स्थानों की जो औपनिवेशिक प्रशासन और भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के केंद्रों से जुड़े रहे हैं। • प्रथम सूचना रिपोर्ट (एफ.आई.आर.) फॉर्म की सामग्री का अध्ययन करना। • मुकदमों में न्याय करने में न्यायाधीशों की भूमिका के बारे में वर्णनात्मक और आलोचनात्मक लेखन द्वारा अपने विचार व्यक्त करना।	• कानून बनाने की प्रक्रिया का वर्णन करते हैं (उदाहरणार्थ, घरेलू हिंसा से स्त्रियों का बचाव अधिनियम, सूचना का अधिकार अधिनियम, शिक्षा का अधिकार अधिनियम)। • कुछ प्रमुख मामलों का उदाहरण देकर भारत में न्यायिक प्रणाली की कार्यविधि का वर्णन करते हैं।

सामाजिक विज्ञान में शिक्षण के उदाहरण

विषय, ग्लोब— अक्षांश और देशांतर मॉड्यूल की विषयवस्तु रूपरेखा

मॉड्यूल कक्षा छह में चर्चा किए गए विषय से संबंधित सीखने के प्रतिफलों पर आधारित है। यह परस्पर क्रियात्मक और सहभागी शिक्षार्थी केंद्रित दृष्टिकोण के माध्यम से अक्षांश और देशांतर की संकल्पनात्मक समझ पर बल देता है। पूरे मॉड्यूल में सतत मूल्यांकन भी अंतर्निहित है।

अधिगम के उद्देश्य

विद्यार्थी पहचान कर सकेंगे—

- अक्षांश
- देशांतर
- अक्षांश और देशांतर के बीच का अंतर
- उत्तरी ध्रुव और दक्षिणी ध्रुव
- भूमध्य रेखा
- कर्क रेखा
- मकर रेखा
- प्रधान याम्योत्तर (0 डिग्री देशांतर)
- अक्षांश और देशांतर की सहायता से ग्लोब पर किसी स्थान की स्थिति
- अक्षांश और देशांतर के माध्यम से मानचित्र और एटलस में किसी स्थान की स्थिति

विषय में कक्षा आधारित सीखने के प्रतिफल

ग्लोब पृथ्वी का एक मॉडल है। ग्लोब पर अक्षांश और देशांतर पृथ्वी पर किसी भी स्थान की स्थिति का पता लगाने में मदद करते हैं। पृथ्वी पर स्थानों की पहचान करने और उनके बारे में जानने के लिए विद्यार्थियों के बीच स्थानिक कौशल को बढ़ाने की आवश्यकता है।

सीखने के प्रतिफल प्राप्त करने के लिए एक संक्षिप्त विवरण

विद्यार्थियों को ग्लोब व मानचित्र पर अक्षांश और देशांतर की पहचान कराने के लिए कई शैक्षणिक तरीकों को अपनाया जा सकता है। विद्यार्थियों को ग्लोब और मानचित्र का बार-बार उपयोग करने के अवसर दिए जाने चाहिए। कक्षा में पढ़ाई के दौरान विद्यार्थियों को उसमें शामिल करने के लिए स्पर्शी ग्लोब, स्पर्शी मानचित्रों, अक्षांश और देशांतर के आरेखों और कागज़ पर ग्रिड या ब्लैकबोर्ड पर चित्र बनाने के साथ-साथ, अक्षांशों और देशांतरों के 3-डी मॉडल का उपयोग किया जा सकता है। शिक्षकों को अवधारणाओं या संकल्पनाओं को समझाने के लिए स्थानीय भाषा में विद्यार्थियों के साथ संवाद करने का प्रयास करना चाहिए। विद्यार्थियों का उनकी समस्या निवारण कौशल के साथ-साथ, उपयुक्त प्रश्न करने की योग्यता और उसे अन्य संबंधित अवधारणाओं से जोड़ सकने, जिज्ञासा (सु-वृत्ति) और शिक्षण-प्रशिक्षण प्रक्रिया में सक्रिय भागीदारी के आधार पर शिक्षकों द्वारा मूल्यांकन किया जाना चाहिए।

शिक्षक पृथ्वी की तस्वीर दिखाकर विषय पढ़ाने की शुरुआत कर सकते हैं और पूछ सकते हैं कि क्या विद्यार्थियों ने अपनी पुस्तकों में या टेलीविज़न पर अंतरिक्ष से ली गई पृथ्वी की तस्वीर देखी है? इसके अलावा जैसा कि चित्र में है, पृथ्वी के रंग और आकार के बारे में प्रश्न पूछें।

विद्यार्थियों द्वारा किए गए अवलोकन को नोट करें।

चित्र 1.1, कक्षा में ग्लोब देखती छात्राएँ

अब विद्यार्थियों का परिचय ग्लोब से कराएँ जो पृथ्वी का एक मॉडल है। विद्यार्थियों के छोटे-छोटे विषम समूह बनाएँ और प्रत्येक समूह को ग्लोब को छूने और महसूस करने के लिए प्रोत्साहित करें। ग्लोब पर विभिन्न स्थानों, रेखाओं और रंगों पर हाथ रखकर उनके चिंतन को और प्रेरित करें। विद्यार्थियों से अपने अनुभवों को आपस में साझा करने के लिए कहें।

प्रश्नोत्तरी— शिक्षकों द्वारा कार्ड्स का एक सेट बनाया जा सकता है। प्रत्येक कार्ड पर भारत/विश्व में स्थित किसी भी स्थान का नाम लिखें। प्रत्येक विद्यार्थी एक कार्ड को लकी ड्रा के माध्यम से एकत्र करेगा और ग्लोब/विश्व के मानचित्र पर स्थान का पता लगाएगा।

कागज़ पर उनके द्वारा किए गए अवलोकन को लिखें और निम्न बिंदुओं के आधार पर विद्यार्थियों का आकलन करें—

- ग्लोब पर दिखायी गई महत्वपूर्ण विशेषताओं की पहचान करने में विद्यार्थियों द्वारा किए गए प्रयास
- सहयोग, समानुभूति और विद्यार्थियों के बीच जानकारी साझा करना।

उत्तरी ध्रुव

स्पर्शी ग्लोब *दक्षिणी ध्रुव*

चित्रः 1— ग्लोब

एक समावेशी कक्षा में विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों के लिए स्पर्शी ग्लोब और अन्य संबंधित वस्तुएँ पृथ्वी के आकार और अक्षांश व देशांतर को समझने के लिए उपलब्ध करायी जा सकती हैं।

बच्चे आपस में चर्चा करते हैं—

- अगर ग्लोब पृथ्वी का एक मॉडल है, तो हम ग्लोब पर कहाँ रहते हैं? (अधिकांश विद्यार्थी कहेंगे कि हम ग्लोब के अंदर रहते हैं। कुछ विद्यार्थी शायद कहें कि हम ग्लोब की सतह पर रहते हैं)।
- क्या पृथ्वी किसी स्टैंड पर स्थिर है और ग्लोब की तरह दोनों तरफ घूमती है?
- ग्लोब ज्यादातर नीले रंग में क्यों होता है?

यहाँ शिक्षक विद्यार्थियों के प्रश्नों के उत्तर देकर उनकी सहायता करते हैं।

शिक्षक स्पष्ट करेंगे कि हम पृथ्वी की सतह पर रहते हैं, उसके अंदर नहीं। दो बिंदुओं पर ध्यान दें, एक उत्तर में (ऊपर) और दूसरा दक्षिण में (नीचे)। आप यह भी देखेंगे कि ग्लोब के अंदर से होती हुई एक सुई लगी है जिसे इसकी धुरी या अक्ष रेखा कहा जाता है। इसके सहारे ग्लोब झुकी हुई अवस्था में होता है। अक्ष रेखा के अंतिम बिंदु क्रमशः उत्तरी ध्रुव और दक्षिणी ध्रुव हैं। लेकिन वास्तव में पृथ्वी में ऐसी कोई सुई नहीं है। यह अपनी धुरी पर घूमती है, जो एक काल्पनिक रेखा है। ग्लोब भी एक जगह स्थिर नहीं है। इसे उसी तरह घुमाया जा सकता है जैसे कि कुम्हार के चक्के का ऊपरी पहिया घुमाया जाता है। इस प्रकार ग्लोब को दोनों दिशाओं, पूर्व और पश्चिम में घुमाया जा सकता है, लेकिन पृथ्वी केवल पश्चिम से पूर्व की ओर घूमती है। ग्लोब पर भूमि और पानी को दिखाने के लिए उपयोग किए जाने वाले विभिन्न रंगों का निरीक्षण करें।

हम ग्लोब पर कहाँ रहते हैं, ऐसे प्रश्न पूछकर सीखने को सरल बनाएँ।

बच्चे आपस में चर्चा करते हैं—

- हमारा देश ग्लोब पर कहाँ स्थित है?
- ग्लोब में इतनी ऊर्ध्वाधर और क्षैतिज रेखाएँ क्यों हैं?
- क्या ये ऊर्ध्वाधर और क्षैतिज रेखाएँ भूमि पर बनी हुई हैं?
- ग्लोब पर दिशाएँ कैसे खोजें?
- ग्लोब पर अक्षांश और देशांतर क्यों बनाए जाते हैं?
- अक्षांशों की तुलना में देशांतर अधिक हैं। क्यों?

शिक्षक ग्लोब के बारे में अधिक से अधिक जानने के लिए संसाधन और अवसर प्रदान करता है। वह धागे या टेप या आसानी से उपलब्ध दूसरे स्थानीय संसाधनों की मदद से ग्लोब पर बनी विभिन्न रेखाओं को मापने में भी विद्यार्थियों मदद करता है।

पृथ्वी जैसे किसी गोलाकार क्षेत्र पर किसी स्थान की वास्तविक स्थिति बता सकना मुश्किल है। हमें स्थानों की स्थिति का पता लगाने के लिए कुछ संदर्भ बिंदुओं की आवश्यकता होती है। उत्तरी ध्रुव और दक्षिणी ध्रुव दो संदर्भ बिंदु हैं। सभी अक्षांश और देशांतर काल्पनिक रेखाएँ हैं जो ग्लोब और मानचित्र पर तो बनायी जाती हैं, लेकिन पृथ्वी की सतह पर नहीं हैं।

अक्षांश

अब ग्लोब पर उत्तरी और दक्षिणी ध्रुवों को मिलाने वाली किसी भी रेखा के साथ-साथ अपनी उँगलियों को उत्तरी ध्रुव से दक्षिणी ध्रुव की ओर ले जाएँ। जब आपकी उँगलियाँ मध्य बिंदु तक पहुँचती हैं, तो आप देखेंगे कि ग्लोब को घेरे हुए वहाँ एक क्षैतिज रेखा है, इस रेखा को भूमध्य रेखा कहा जाता है। भूमध्य रेखा ग्लोब को दो समान भागों/हिस्सों में विभाजित करती है अर्थात— उत्तरी गोलार्ध और दक्षिणी गोलार्ध। भूमध्य रेखा को 0° अक्षांश भी कहा जाता है। क्या आपने ग्लोब पर अक्षांशों की अन्य रेखाएँ देखीं? अक्षांश की ये रेखाएँ बताती हैं कि आप भूमध्य रेखा से कितने उत्तर या दक्षिण में हैं। क्या आप उत्तर और दक्षिण की ओर भूमध्य रेखा से अक्षांशों की लंबाई में कोई अंतर पाते हैं? विद्यार्थी ग्लोब को ध्यान से देखेंगे और अपने विचार व्यक्त करेंगे। अक्षांश की सभी रेखाएँ भूमध्य रेखा से छोटी होती हैं। ध्रुवों पर 90° उत्तर और 90° दक्षिण को एक बिंदु द्वारा दिखाया जाता है। अक्षांश रेखाओं को समानांतर अक्षांश रेखाएँ कहा जाता है क्योंकि वे एक-दूसरे के समानांतर होती हैं और एक-दूसरे को नहीं छूती हैं। सभी अक्षांश रेखाएँ भूमध्य रेखा के समानांतर होती हैं। क्या आपको भूमध्य रेखा के उत्तर और दक्षिण में कोई बिंदुओं की रेखा नज़र आती है? इन बिंदुओं की रेखा पर उल्लिखित डिग्री पढ़ें। आप देखेंगे कि 23.5° उत्तरी अक्षांश कर्क रेखा है और 23.5° दक्षिण अक्षांश मकर रेखा है। विद्यार्थी अपनी उँगलियाँ कर्क रेखा और मकर रेखा पर फेरेंगे और शिक्षक उन्हें दुनिया के उन देशों के नाम को बताने के लिए प्रेरित करेंगे जिनसे होकर ये रेखाएँ गुजरती हैं।

गतिविधि 2

1. भूमध्य रेखा के उत्तर और दक्षिण में स्थित स्थानों के नाम बताइए।
2. एटलस में अक्षांश का उपयोग करते हुए स्थानों का पता लगाएँ।

देशांतर

शिक्षक, विद्यार्थियों को उत्तर से दक्षिण दिशा की ओर जाने वाली रेखाओं का निरीक्षण करने के लिए प्रोत्साहित करेंगे जो उत्तरी और दक्षिणी ध्रुवों पर मिलती हैं। उत्तरी और दक्षिणी ध्रुवों पर मिलने वाली इन खड़ी रेखाओं को देशांतर कहा जाता है।

धागे की मदद से देशांतर की लंबाई को मापें। अक्षांश और देशांतर की लंबाई की तुलना करें। इनमें से कौन बड़ी है?

अक्षांशों के विपरीत, ये सभी रेखाएँ समान लंबाई की होती हैं। देशांतर रेखा को याम्योत्तर (उत्तरी तथा दक्षिणी ध्रुवों को जोड़ने वाली) भी कहा जाता है और यह मापती है कि कोई

स्थान 0° याम्योत्तर रेखा जिसे मानक याम्योत्तर रेखा भी कहा जाता है, से पूर्व या पश्चिम दिशा में कितनी दूरी पर स्थित है। मानक याम्योत्तर रेखा के ठीक विपरीत 180° (पूर्व और पश्चिम) देशांतर है। इस प्रकार देशांतर रेखाओं को मानक याम्योत्तर रेखा (0° देशांतर) के संदर्भ में पूर्व तथा पश्चिम की ओर मान (डिग्री) दिया जाता है जो ब्रिटेन में लंदन के पास स्थित ग्रीनविच से होकर गुजरती है। ग्लोब पर 360 याम्योत्तर रेखाएँ दिखायी देती हैं।

चित्र–2, ग्लोब और ब्लैक बोर्ड (2-डी) पर ग्रिड में स्थानों का स्थिति

गतिविधि 3

चुनौती लें—

1. ग्लोब पर मानक याम्योत्तर रेखा का पता लगाएँ और इस रेखा पर स्थित किसी भी स्थान का नाम बताएँ।
2. 180° देशांतर पर स्थित किसी स्थान का नाम बताएँ।

विद्यार्थी पूछ सकते हैं कि ग्लोब पर स्थानों जैसे देशों का पता कैसे लगाया जाए? ग्रिड; ग्लोब पर या किसी अन्य सपाट सतह पर स्थानों की स्थिति के बारे में बताने का सबसे सरल तरीका है। ग्लोब पर आप देशांतर (लंबवत रेखाएँ) और अक्षांश (क्षैतिज रेखाएँ) को समकोण पर एक-दूसरे को काटते देखते हैं और इस तरह ग्रिड बनाते देखते हैं।

उपग्रह (सैटेलाइट) से प्राप्त चित्रों पर स्थानों की स्थिति का पता लगाने के लिए रा.शै.अ.प्र.प. के जिओ पोर्टल स्कूल भुवन का उपयोग करें।

गतिविधि 4

ग्लोब पर निम्नलिखित स्थानों या इनके पास स्थित जगहों/स्थानों का पता लगाएँ

30° उत्तर अक्षांश, 90° पश्चिम देशांतर

60° उत्तर अक्षांश, 15° पूर्वी देशांतर

निम्न गतिविधि का उपयोग कक्षा में साथियों के कार्यों की समीक्षा के लिए किया जा सकता है।

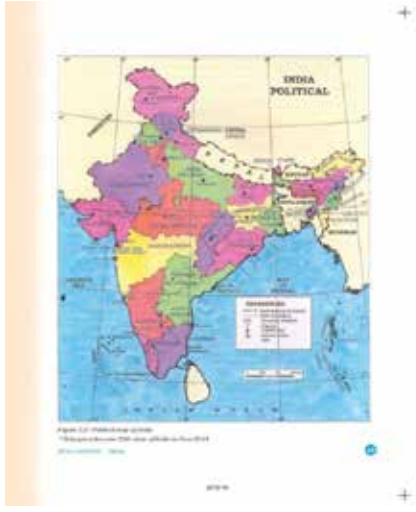

गतिविधि 5

दिए गए अक्षांशों और देशांतरों की मदद से भारत के मानचित्र पर राज्यों का पता लगाएँ।

भारत का मानचित्र, स्रोत— पृथ्वी हमारा आवास, कक्षा छह, पृष्ठ 51

शिक्षक भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) द्वारा विकसित एक मोबाइल एप्लिकेशन, भुवन का उपयोग करते हुए आस-पड़ोस का मानचित्र भी दिखा सकते हैं।

अक्षांश और देशांतर पर राज्य की स्थिति

15° उत्तर अक्षांश, 80° पूर्वी देशांतर .....

24° उत्तर अक्षांश, 72° पूर्वी देशांतर .....

विद्यार्थी आपस में अपनी उत्तर पुस्तिकाओं का आदान-प्रदान कर मूल्यांकन कर सकते हैं।

	श्रेणी
डिग्री पढ़ना	1. अक्षांश 2. देशांतर 3. अक्षांश और देशांतर दोनों
ग्लोब पर अक्षांश और देशांतर की पहचान करना	1. कर्क रेखा 2. कर्क रेखा, 80° उत्तरी देशांतर 3. कर्क रेखा, 80° उत्तरी देशांतर, कर्क रेखा पर राज्य
स्थानों की स्थिति बताना	15° उत्तरी अक्षांश, 80° पूर्वी देशांतर 24° उत्तरी अक्षांश, 72° पूर्व देशांतर 1 और 2 का सही जवाब

शिक्षक विद्यार्थियों की प्रगति की जाँच करने के लिए कि उन्हें कितना समझ आया, उनके द्वारा उठाए गए सभी प्रश्नों को पोर्टफोलियो में रिकॉर्ड करेंगे।

आकलन के लिए निर्देश

आकलन	सहायता की आवश्यकता है	बेहतर करने की क्षमता है	दूसरों की सहायता और मार्गदर्शन कर सकता है
पहचानना और समझना— ग्लोब, अक्षांश व देशांतर और संबंधित शब्दों को पहचानता है।	नाम याद करने में असमर्थता	नाम आसानी से याद रहते हैं।	नाम याद रहते हैं और एटलस व अन्य मानचित्रों में दी गई वैसी ही छवियों से उसे जोड़कर देख पाता है।

समझना— अक्षांश और देशांतर के उपयोग की व्याख्या करता है	अक्षांश और देशांतर की डिग्री पढ़ सकने में असमर्थता	अक्षांश और देशांतर की डिग्री पढ़ने में सक्षम, लेकिन दिशाओं के साथ उनके संबंध को बताने में असमर्थ	अक्षांश और देशांतर तथा दिशाओं, महत्वपूर्ण अक्षांशों, देशांतरों, याम्योत्तर, आदि को पढ़ने में सक्षम।
अनुप्रयोग— ग्लोब पर अक्षांश और देशांतर की मदद से स्थानों का पता लगाता है	अक्षांश और देशांतर के संदर्भ में स्थानों का पता लगाने में असमर्थ	अक्षांश और देशांतर के संदर्भ में स्थानों का पता लगाने में सक्षम, लेकिन थोड़ी कठिनाई के साथ	अक्षांश और देशांतर के संदर्भ में आसानी से स्थानों का पता लगाने में सक्षम। प्रमुख अक्षांशों और देशांतरों के साथ अन्य स्थानों की स्थिति का पता लगाता है।
समूह के सभी सदस्यों के साथ सहयोग, सक्रिय सहभागिता, समानुभूति	कक्षा में होने वाले कार्यकलापों में भाग नहीं लेता है।	कक्षा में समूह के केवल चुनिंदा सदस्यों के साथ बातचीत करता है।	समूह के सभी सदस्यों के साथ बात करता है, क्रियाकलापों में भाग लेता है और साथ ही साथ दूसरों की मदद करने के लिए पहल करता है।

इतिहास

विषय— स्रोत

परिचय

सामाजिक विज्ञान का क्षेत्र स्रोतों के भंडार से भरा हुआ है जो शिक्षार्थियों को विभिन्न विषयों को गहराई से समझने में सक्षम बनाता है। स्रोत मुख्य रूप से प्राथमिक और द्वितीयक होते हैं। वे शिक्षार्थियों को विभिन्न समयावधियों पर प्रकृति के साथ और व्यक्तियों व समाज के साथ मानवीय अतंर्क्रियाओं से संबंधित गहन जानकारी प्राप्त करने में मदद करते हैं। स्रोत कई हैं, लेकिन आपके लिए विषय के अनुसार उनकी पहचान करना महत्वपूर्ण है, ताकि शिक्षार्थियों को विषय के बारे में समग्र दृष्टिकोण प्राप्त हो सके। आपको उन्हें प्रत्येक स्रोत का गंभीर रूप से पता लगाने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए ताकि वे स्वयं अपने किसी निष्कर्ष पर पहुँच सकें। उनकी सहायता करके, आप अतीत में घटी विभिन्न घटनाओं की खोज करने की उनकी यात्रा की शुरुआत कर सकते हैं, ताकि वे घटनाओं और घटनाओं के कारणों, प्रभावों और परिणामों के बीच के अंतर्संबंधों को रोचक ढंग से समझ पाएँ। साथ ही वे इस विषय के तहत और इसके परे, समय, स्थान और संस्थान के बीच एक सूत्र भी जोड़ पाएँगे और निरंतरता एवं परिवर्तन की घटनाओं को समझने के लिए प्रेरित होंगे। चित्र का आरेखी (डायग्राम) चित्रण—

शैक्षणिक प्रक्रियाएँ

स्रोतों पर चर्चा करते हुए आप कक्षा शिक्षण को शिक्षार्थियों के जीवन से जोड़ते हुए उसे सहभागी, आनंदमय व उत्साहवर्धक बना सकते हैं। आप लगातार बच्चों के साथ बात कर सकते हैं; समूहों और जोड़े के रूप में गतिविधियों की शुरुआत कर सकते हैं ताकि बच्चे स्रोतों के बारे में अधिक से अधिक पढ़ने के लिए प्रेरित हों। विवेचनात्मक ढंग से स्रोतों पर चर्चा करें, अपनी स्वयं की व्याख्याएँ दें, प्रश्न उठाएँ और जानकारी में और वृद्धि करें। आप बच्चों को संग्रहालय, पुरातात्विक स्थल दिखाने भी ले जा सकते हैं या उनके परिवार, पड़ोस और समुदाय में किसी ख्याति प्राप्त व्यक्ति का साक्षात्कार भी कर सकते हैं— विशेष रूप से भारत के स्वतंत्रता संग्राम और विभाजन से संबंधित जानकारी प्राप्त करने के संदर्भ में। गतिविधियों का संचालन करते समय आप विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों (जो मानसिक या शारीरिक रूप से अलग हैं) को भी शामिल कर सकते हैं। आप उभरे हुए (tactile) नक्शों, आरेख, बोलने वाली किताबों, दृश्य-श्रव्य सामग्रियों, ब्रेल आदि जैसे स्रोतों का भी उपयोग कर सकते हैं।

अपेक्षित सीखने के प्रतिफल

शिक्षार्थी—

1. विविध ऐतिहासिक और पुरातात्विक स्रोतों की पहचान करता है;
2. अपनी भाषा में स्रोतों की व्याख्या करता है;
3. उपयोग किए गए स्रोतों का मूल्यांकन करता है;
4. समग्र रूप से चीज़ों को प्राप्त करने के लिए विभिन्न स्रोतों के उपयोग के महत्व को पहचानता है।

स्रोतों के प्रकार

साहित्यिक स्रोत— आप विद्यार्थियों को यह बताकर साहित्यिक स्रोतों पर चर्चा शुरू कर सकते हैं कि विचारों और जानकारियों को लिखने के लिए कागज़ के महत्वपूर्ण बनने से पहले लोग भोजपत्रों या ताड़ के पत्तों का इस्तेमाल करते थे। हमारे ऐतिहासिक अतीत में घटित होने वाली कई घटनाओं के बारे में बहुत से लिखित प्रमाण पांडुलिपियों में वर्णित हैं, जो मंदिरों, मठों, संग्रहालयों और कुछ परिवारों के पास उनके निजी संग्रह के रूप में उपलब्ध

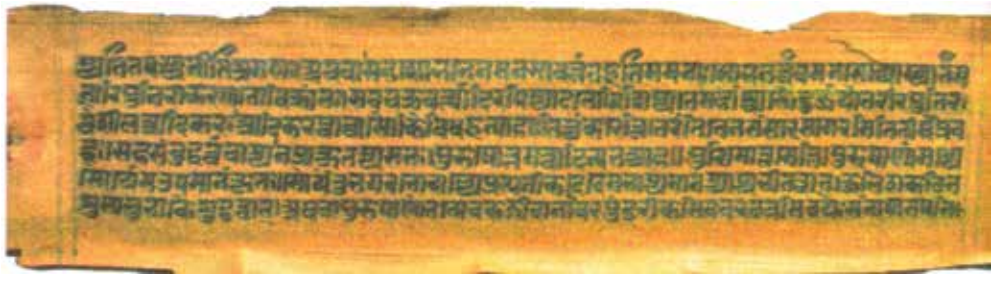

** हमारे अतीत 1, कक्षा छह के लिए इतिहास की पाठ्यपुस्तक (2017), रा.शै.अ.प्र.प., पृष्ठ 4*

हैं। उनमें मुख्य रूप से विभिन्न विषयों जैसे धार्मिक विश्वासों, राजाओं के जीवन, प्रशासनिक मामलों, विज्ञान, शिक्षा और कई अन्य चीज़ों के बारे में लिखा गया है। वे संस्कृत, प्राकृत, तमिल और अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में लिखे गए थे।

ऐसी गतिविधि, जो अकेले, जोड़े में या समूहों में की जा सकती है—

1. क्या आपने पांडुलिपि देखी है?
2. आपको यह कहाँ मिली?
3. इसमें किस सामग्री का उपयोग किया गया है?
4. जिन अन्य सामग्रियों का लिखने के लिए इस्तेमाल किया गया था, उनका उल्लेख करें।
5. अपने विचारों को लिखने के लिए आप अब किस सामग्री का उपयोग कर रहे हैं?
6. लेखन के लिए उपयोग की जाने वाली सामग्रियों में हुए परिवर्तनों के स्तर को दिखाते हुए एक घटनाक्रम (टाइम लाइन) बनाएँ।

जब मनुष्यों को धातुओं के बारे में पता चला, तो धीरे-धीरे उन पर विभिन्न प्रकार की साहित्यिक रचनाएँ लिखी गईं, जैसे कि तांबे, काँसे आदि पर; और उसके बाद कागज़ पर लिखा जाने लगा। ये साहित्यिक कार्य विभिन्न प्रकार के थे। ये धार्मिक विषयों से संबंधित थे, प्रशासनिक दस्तावेज थे, शैक्षिक एवं अन्य विविध मामलों से संबंधित थे और अलग-अलग समयावधियों पर लिखे गए थे। लिखित ग्रंथ विविध भाषाओं में थे और उनमें साहित्यिक शैलियों के विभिन्न रूपों को अपनाया गया था। इनमें से कुछ गद्य, कविता, कहानी, संवाद, आदि के रूप में थे। आपने उनमें से कुछ के बारे में बच्चों को अवश्य ही बताया होगा। हमारी कुछ प्रसिद्ध कानून की पुस्तकें *धर्मसूत्र और स्मृतियाँ* हैं। इन प्रसिद्ध रचनात्मक कार्यों में राजाओं, प्रशासकों और लोगों के कर्तव्य निहित हैं। इनमें संपत्ति के मामलों का भी ज़िक्र है और उनका भी जिन्हें दीवानी और फ़ौजदारी से संबंधित अपराधों को तय करने के लिए निर्धारित किया जाता है। प्रशासन के क्षेत्र में कौटिल्य का *अर्थशास्त्र* एक प्रसिद्ध रचना मानी जाती है। इसी प्रकार, चिकित्सा के क्षेत्र में आप चरक द्वारा लिखित *चरक संहिता* और सुश्रुत की *सुश्रुत संहिता* का उदाहरण दे सकते हैं जिसमें विस्तृत शल्य चिकित्सा पद्धतियों पर प्रकाश डाला गया है। इन उदाहरणों को जानकारी हासिल किए जा रहे विषय की आवश्यकता के अनुसार उसमें जोड़ा जा सकता है। शिक्षण और सीखने की प्रक्रिया में आप पाठ्यपुस्तक से किसी भी विषय पर चर्चा कर सकते हैं और यह पता लगाने की कोशिश कर सकते हैं कि क्या कुछ मौजूदा ग्रंथों में इसका उल्लेख किया गया है या नहीं। आप पुरुषों और महिलाओं द्वारा लिखे गए साहित्यिक स्रोतों को भी जोड़ सकते हैं। भक्ति आंदोलन के बारे में पढ़ाते समय महिलाओं द्वारा रचित जिन साहित्यिक रचनाओं का उल्लेख किया जा सकता है, उनमें भारत की संत कवियत्रियों की रचनाएँ, जैसे अंडाल की रचनाएँ ली जा सकती हैं। उन्होंने *थिरुप्पवई* और *नचियार थिरुमोझी* लिखी थीं। उनकी ये दोनों रचनाएँ तमिल भाषा में हैं और मुक्ति प्राप्ति के साधन के रूप में भक्ति पर केंद्रित हैं। इसी तरह मीराबाई की पदावली

भी भक्ति पर केंद्रित है। दोनों रचनाएँ उस समाज को चित्रित करती हैं जिसमें वे रहती थीं। संत कवियों की रचनाओं ने स्थानीय भाषा और साहित्य को समृद्ध किया और हमारी कला और संस्कृति को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उत्तरी और दक्षिणी भारत में कई मंदिर महिला संतों को समर्पित हैं। संतों, पुरुषों और महिलाओं द्वारा उपयोग किए जाने वाले संगीत वाद्ययंत्र आज भी हर तरह के समुदाय गायन में लोकप्रिय हैं।

महिलाओं का कुछ महत्वपूर्ण रचनाओं, जैसे— तमिल महाकाव्य *सिलप्पादिकारम* में भी उल्लेख मिलता है। साथ ही उपनिषदों जैसे महान दार्शनिक ग्रंथों में भी गार्गी जैसी महिला चिंतकों का उल्लेख मिलता है। वह एक महान विद्वान थीं और राज दरबारों में होने वाली दार्शनिक बहसों में भाग लेती थीं। साहित्यिक रचनाओं में शासकों की जीवनियाँ भी शामिल थीं, जिनको लिखने वाले कई लेखक दरबार के ही इतिहासकार थे। बाणभट्ट ने *हर्षचरित* लिखी, बिल्हण ने विक्रमादित्य के बारे में लिखा और कल्हण की *राजतरंगिणी* कश्मीर के इतिहास का लेखा-जोखा है, चंदबरदाई ने *पृथ्वीराज चरित* लिखा था। प्राचीन भारत के साम्राज्यों की चर्चा करते समय आप इस सूची में कई और नाम जोड़ सकते हैं। आप शिक्षार्थियों को यह भी बता सकते हैं कि साहित्यिक रचनाओं का उपयोग अन्य स्रोतों, जैसे पुरातात्विक साक्ष्य के साथ किया जाना चाहिए, ताकि अतीत की एक समग्र तस्वीर मिल सके।

मिश्रित समूहों में की जाने वाली गतिविधि

क्रम सं.	लेखक	पाठ	वह समय, जिससे वे संबंधित हैं

उन लोगों के वृत्तांत जिन्होंने समय-समय पर भारतीय उपमहाद्वीप की यात्राएँ की थीं

समय-समय पर बहुत से लोगों ने भारतीय उपमहाद्वीप की यात्राएँ की हैं। इन सबकी यात्रा के उद्देश्य अलग-अलग थे— कुछ लोग यात्रियों के रूप में आए और कुछ तक्षशिला और नालंदा जैसे प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों में दाखिला लेना चाहते थे। जो लोग बौद्ध धर्म के बारे में और अधिक जानने की तलाश में बौद्ध तीर्थयात्रियों के रूप में आए, उन्होंने अपनी रचनाओं या लेखों में इसका विस्तृत विवरण दिया है। वे सारी यात्री जो हमारे देश में आए थे, अपने पीछे हमारी संस्कृति, विरासत, शैक्षिक प्रणाली, धर्म और समाज के बारे में और यहाँ के शासकों के बारे में बहुमूल्य और विस्तृत विवरण छोड़ गए। उन्होंने जो लिखा, वह हमारे अतीत के बारे में जानने का एक बड़ा माध्यम व स्रोत है। शिक्षण और सीखने की प्रक्रिया में आप यह भी बता सकते हैं कि यात्रियों के विवरणों का उपयोग अन्य स्रोतों के साथ भी किया जाना चाहिए, क्योंकि उन्होंने समाज व अपनी रुचि की घटनाओं को अपने दृष्टिकोण से समझा और इसलिए उनमें एक व्यक्तिपरकता का तत्व जुड़ा हुआ है। उनके विवरण हमेशा

पूरी तरह से किसी जानकारी के वैसे प्रामाणिक आधार नहीं हो सकते, जिनके आधार पर किसी तरह के निष्कर्ष तक पहुँचा जा सके। आप यूनानी राजदूत मेगास्थनीज का उदाहरण दे सकते हैं जो चंद्रगुप्त मौर्य के दरबार में रहे और अपनी प्रसिद्ध पुस्तक *इंडिका* लिखी।

हालाँकि यह पुस्तक खो गई है, पर इसके अंश अन्य यूनानी लेखकों के लेखन में पाए जाते हैं। यह पुस्तक मौर्यकाल के बारे में प्रकाश डालती है और इसमें सिकंदर के आक्रमण का भी उल्लेख है। कई चीनी तीर्थयात्री भी हमारे देश में आए। 1600 साल पहले गुप्त काल के शासन के दौरान फाहियान भारत आए थे। इसी तरह ह्वेनत्सांग ने राजा हर्ष के दरबार में बहुत समय बिताया। उन्होंने कई संस्कृत रचनाओं का चीनी भाषा में अनुवाद भी किया। उन्होंने नालंदा विश्वविद्यालय में अध्ययन किया और अपने अनुभवों के बारे में लिखा। दूसरे यात्री जो बहुत बाद में भारत आए, वह थे अल बरुनी। उनकी प्रसिद्ध पुस्तक *किताब-उल-हिंद* है जिसमें लोगों और समाज का बेहद उपयोगी विवरण दिया गया है। जिस विषय पर चर्चा हो रही है, उसके अनुसार आप और उदाहरण दे सकते हैं। आप उन्हें नक्शे में वे मार्ग भी दिखा सकते हैं, जिससे वे आए थे और जिन महत्वपूर्ण स्थानों पर वे गए थे।

सामान्य लोगों ने भी साहित्यिक विवरणों के विभिन्न रूपों की रचना की। आप उनके बारे में *जातक* और *पंचतंत्र* में पढ़ सकते हैं। जातक कथाओं को अक्सर स्तूपों की रेलिंग और अजंता के भित्ति-चित्रों में दिखाया गया है और इससे हमारे समय की कला और संस्कृति समृद्ध हुई है। ये कहानियाँ अलग-अलग चरित्रों पर केंद्रित थीं, जिनमें स्त्री, पुरुष, जानवर सब शामिल थे।

गतिविधियाँ जो जोड़े और समूहों में आयोजित की जा सकती हैं

अलग-अलग उद्देश्य से भारतीय उपमहाद्वीप में आने वाले व्यक्ति	उनकी यात्रा का कालखंड	विवरण	उनके विवरणों में रेखांकित विशिष्ट पहलू

मुद्राशास्त्र

मुद्राशास्त्र सिक्कों, कागज़ के नोटों और टोकनों का अध्ययन है। यह अर्थव्यवस्था और लोगों के कल्याण की स्थिति पर प्रकाश डालता है। बहुमूल्य सिक्कों का एक बड़े पैमाने पर मुद्रा के रूप में चलन दर्शाता है कि आर्थिक स्थिति सुदृढ़ है। हमारे ऐतिहासिक अतीत में जिन सिक्कों का इस्तेमाल किया गया था, वे सोने, चाँदी, तांबे, सीसे जैसी बहुमूल्य धातुओं से बने थे और बाद में कागज़ का इस्तेमाल मुद्रा के रूप में होने लगा। आरंभ में इस्तेमाल किए गए सिक्के आहत सिक्के (पंचमार्क्ड क्वाइन) थे जो आमतौर पर आयताकार होते थे और कभी-कभी चौकोर या गोलाकार भी होते थे। बाद में अधिकांश सिक्के शासक राजवंशों द्वारा जारी

इंडो-ग्रीक सिक्का

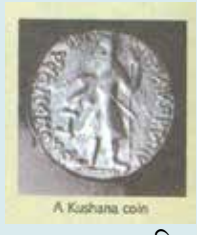

कुषाण काल का सिक्का

आहत सिक्का

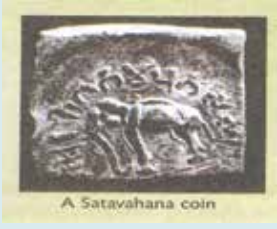

सातवाहन काल का सिक्का

शक काल का सिक्का

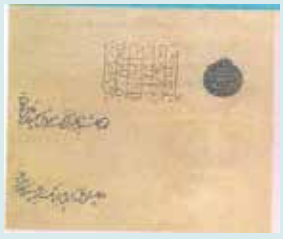

रानी नूरजहाँ के नाम वाला चाँदी का सिक्का

हमारे अतीत 1, कक्षा छह के लिए इतिहास की पाठ्यपुस्तक (2017), रा.शै.अ.प्र.प., पृष्ठ 86, 92
हमारे अतीत 2, कक्षा सात के लिए इतिहास की पाठ्यपुस्तक (2017), रा.शै.अ.प्र.प., पृष्ठ 54

किए जाने लगे और इसलिए उनमें से कई पर शासकों के नाम उत्कीर्ण हैं। आपने संग्रहालयों में गुप्त और कुषाण काल के या इसके बाद के भी सिक्के देखे होंगे। कुछ रोचक जानकारियाँ जो आप शिक्षार्थियों के साथ साझा करना पसंद कर सकते हैं, मसलन—

आप जहाँगीर का उदाहरण दे सकते हैं कि उसने कैसे चाँदी के सिक्कों के एक तरफ खुद का नाम और दूसरी तरफ रानी नूरजहाँ का नाम लिखवाकर उन्हें बनवाया था।

कुछ सिक्कों में धार्मिक और पौराणिक प्रतीक होते हैं। आप निम्नलिखित गतिविधि का आयोजन करके विषय को आगे बढ़ा सकते हैं—

समूहों और जोड़े में होने वाली गतिविधि

वर्तमान समय में उपयोग किए जाने वाले कुछ सिक्के बच्चों को दिखाएँ। अब आप—

1. जो लिखा है, उसे पढ़ने के लिए कह सकते हैं।
2. किस प्रतीक का उपयोग किया गया है, यह बताने के लिए कह सकते हैं।
3. पूछ सकते हैं कि किन दृश्यों को विशेष तौर पर दिखाया गया है।
4. किस धातु का उपयोग किया गया है?
5. स्मारक सिक्के क्या होते हैं?
6. क्या वे किसी शख्सियत का नाम बता सकते हैं जिसके नाम पर स्मारक सिक्का जारी किया गया हो?

शिलालेख

शिलालेखों के अध्ययन को पुरालेख विद्या (एपिग्राफ़ी) कहा जाता है। प्राचीनतम शिलालेख चट्टानों, स्तंभों, पत्थर की पट्टियों, इमारतों की दीवारों, स्मारकों और मंदिरों पर उत्कीर्ण किए जाते थे। ये शिलालेख विविध संदेश दिया करते थे। आप सम्राट अशोक के समय के शिलालेखों का उदाहरण दे सकते हैं जो देश के विभिन्न भागों में पाए गए थे। अशोक के समय के अधिकांश शिलालेख प्राकृत में थे और ब्राह्मी लिपि में लिखे गए थे। आप इसमें यह भी जोड़ सकते हैं कि उसका एक शिलालेख खरोष्ठी में लिखा गया था जो कंधार, अफगानिस्तान में मिला था। यह यूनानी और आर्मेइक लिपि में लिखा गया था। आप पाठ्यपुस्तकों या अन्य दृश्य-सामग्रियों, ई-संसाधनों आदि से चित्र दिखा सकते हैं।

इस प्रकार, हमारे ऐतिहासिक अतीत, उसकी विविधताओं, विशिष्टताओं और हमारी सांस्कृतिक विरासत के समृद्ध खजाने के बारे में जानने के लिए स्रोत महत्वपूर्ण संसाधन हैं। जिस विषय पर खोज चल रही है, उसमें शिल्पाकृतियों, वस्तुओं और भवनों जैसे पुरातात्विक अवशेष के रूप, अतिरिक्त जानकारी का समावेश करते हैं। आप बच्चों को आदि मानव, स्तूपों, चित्रों आदि के अवशेष दिखा सकते हैं। वे खोजों या जिस विषय के बारे में चर्चा हो रही है, की एक झलक देते हैं।

आप बच्चों को अपने विचारों को अपनी भाषा में लिखने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु निम्नलिखित गतिविधियाँ दे सकते हैं।

- प्रोजेक्ट के लिए एक विषय चुनें।
- स्रोतों को ढूँढ़ें, पता करें कि क्या वे स्थानीय रूप से उपलब्ध हैं।
- उन्हें वर्गीकृत करें और उस अवधि का उल्लेख करें जिससे वे संबंधित हैं।
- आप अपने आस-पड़ोस, परिवार और समुदाय में "भारत छोड़ो आंदोलन" के साक्षी या विभाजन को झेलने वाले लोगों का पता लगाकर, उनसे भी इस बारे में जानकारी एकत्र कर सकते हैं।

संसाधन के रूप में स्रोतों का उपयोग करते हुए आप कक्षा की पढ़ाई को ऐसा बना सकते हैं जो रोचक तो हो ही, साथ ही उसमें सब की सहभागिता भी हो। आपको प्रत्येक गतिविधि के बाद प्रश्न पूछते हुए, लगातार उनसे संवाद कायम रखना होगा। यदि ज़रूरत पड़े तो, उन्हें अपनी शंकाएँ रखने और जानकारी देने के लिए प्रोत्साहित करें। आप उन लोगों के बारे में भी पता लगाएँ जो ऐसा करने में रुचि नहीं रखते, अवहेलना करते हैं और कक्षा के अन्य विद्यार्थियों को परेशान करते हैं। मिश्रित समूह बनाकर एक-दूसरे के साथ मिलकर सीखने को प्रोत्साहित करें। मानचित्र, दृश्य-सामग्री, मॉडल आदि के रूप में शिक्षण सहायक सामग्री का उपयोग करने के बारे में विचार किया जा सकता है। इससे शिक्षार्थियों को स्रोतों के बारे में समझने और हमारे ऐतिहासिक अतीत में उन स्रोतों के महत्व को समझने में मदद मिलेगी। शिक्षार्थियों का मूल्यांकन प्रोजेक्ट कार्य, निबंध और लघु उत्तरीय प्रश्नों के माध्यम से किया जा सकता है। आप उन्हें अपनी भाषा में उत्तर देने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं।

मॉड्यूल
12

विषय — आजीविका

परिचय

ऐसे विभिन्न तरीके हैं जिनसे लोग भारत के ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में विभिन्न प्रकार की आजीविकाएँ कमाते हैं। लोगों को अपनी आजीविका कमाने के जो अवसर मिलते हैं, वे सभी के लिए समान नहीं हो सकते। जिस तरह का काम वे करते हैं, वह कई कारकों के आधार पर भिन्न हो सकता है, जैसे कि वे जिस क्षेत्र में रहते हैं, जिस क्षेत्र में जाकर बस जाते हैं या क्षेत्र विशेष की संस्कृति आदि। कुछ लोग ऐसे काम कर रहे होते हैं, जो संभवतः उन्हें पूरे वर्ष आय अर्जित करने का अवसर प्रदान करते हैं, जैसे— लघु उद्योग, कुटीर उद्योग और अर्थव्यवस्था के नौकरी देने वाले क्षेत्रों में कार्यरत लोग। कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो वर्ष में कुछ समय के लिए ही काम करते हैं, जैसे कि बुवाई, निराई, कटाई और रोपाई जैसे कृषि-संबंधी कार्यकलाप। अलग-अलग नौकरियों या कामों में अलग-अलग तरह के मुद्दों और चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है, जो फिर से हर व्यक्ति या किसी समूह के लिए अलग-अलग तरह का हो सकता है।

अधिगम के उद्देश्य

- शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के आय के साधनों के बारे में पता लगाएँ;
- यह पता लगाएँ कि लोगों के पास आजीविका कमाने के समान अवसर हैं या नहीं;
- विभिन्न क्षेत्रों में लोग जिन जीवन-स्थितियों और चुनौतियों का सामना करते हैं, उनके बीच समानताओं और अंतर का वर्णन करें।

सुझायी गई शैक्षणिक प्रक्रियाएँ

'आजीविका' विषय के अंतर्गत, पुरुषों और महिलाओं द्वारा ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में विभिन्न आजीविकाओं की उपलब्धता के लिए जिम्मेदार कारकों का वर्णन करने और बच्चों को उसके बारे में समझाने की उम्मीद की जाती है। आप बच्चों को मिश्रित समूहों में शामिल कर सकते हैं और उनके ज़िलों और गाँवों में आजीविका के जो विभिन्न स्रोत हैं, उन पर चर्चा कर सकते हैं। आप उन्हें विभिन्न प्रकार की आजीविकाओं से जुड़े मुद्दों और चुनौतियों का उल्लेख करने के लिए भी प्रेरित कर सकते हैं। प्रकरण अध्ययन (केस स्टडी), विभिन्न सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि के पुरुषों और महिलाओं द्वारा किए जा रहे विभिन्न व्यवसायों पर दृश्य-श्रव्य सामग्रियाँ साझा की जा सकती हैं और उनके बारे में बच्चे क्या सोचते हैं, यह जानने के लिए चर्चाएँ आयोजित की जा सकती हैं। आप पुरुषों और महिलाओं द्वारा की जाने वाली विभिन्न प्रकार की कृषि गतिविधियों से बच्चों को परिचित कराने के लिए पास के किसी खेत में भी ले जा सकते हैं। यदि आपका स्कूल शहरी इलाके में स्थित है, तो विद्यार्थियों को निर्माण स्थलों, कारखानों, दफ़्तरों या बाज़ारों में ले जाया जा सकता है।

उपरोक्त सहभागिता आधारित पद्धतियों के अलावा सर्वेक्षण पद्धति तथा विभिन्न व्यवसायों पर अभिनयात्मक गतिविधियाँ भी की जा सकती हैं। स्कूलों में मेलों का आयोजन किया जा सकता है। विषय के बारे में समझाते हुए ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के अलग-अलग उत्पादों को दिखाने के बारे में सोचा जा सकता है।

मिश्रित साथी समूहों के साथ की जाने वाली गतिविधियाँ

शिक्षणशास्त्र के रूप में गतिविधि परक चर्चा की एक श्रृंखला को इस्तेमाल किया जा सकता है। शुरुआत के लिहाज से, आजीविका की अवधारणा को चर्चा के माध्यम से शिक्षकों और विद्यार्थियों के बीच पेश किया जा सकता है। बातचीत शिक्षार्थियों के माता-पिता के व्यवसायों या उनके कामों के बारे में हो सकती है, जैसे— काम का स्वरूप, व्यवसायों से जुड़ी गतिविधियाँ, वे अपनी कमाई के साथ क्या करते हैं, कमाई को कैसे खर्च किया जाता है, आदि। बातचीत और अन्य गतिविधियों के द्वारा शिक्षक विद्यार्थियों को समझा सकते हैं कि आजीविका एक ऐसा अभिन्न तरीका है जिसके ज़रिए लोग खाने के लिए भोजन, रहने के लिए जगह और पहनने के लिए कपड़ों का इंतजाम कर सकने के लिए पैसे कमाते हैं। इसका मतलब है कि आजीविका पर होने वाली किसी भी चर्चा में विभिन्न व्यवसायों या नौकरियों का विवरण शामिल होगा, जिसमें लोग जीवन की आवश्यक ज़रूरतों को पूरा करने के लिए लगे हुए हैं। शिक्षार्थियों को विभिन्न व्यवसायों को समझने में मदद करने के लिए तीन गतिविधियाँ करवाने का सुझाव दिया जाता है।

1. शिक्षक पाठ्यपुस्तक में पहले से ही उपलब्ध प्रिंट या हाथ से बनायी गई दृश्य-सामग्रियों को उसमें शामिल करें।
2. बच्चों को विभिन्न व्यवसायों में लगे लोगों के चित्र बनाने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है।
3. बच्चों को कुछ प्रश्न पूछते हुए, एक छोटा-सा सर्वेक्षण करने के लिए मार्गदर्शन किया जा सकता है।

गतिविधि 1— शिक्षक पाठ में दिए गए चित्रों को एक कोलाज के रूप में विभिन्न व्यवसायों में व्यक्तियों के चित्रों के साथ शामिल कर सकते हैं और इसे विद्यार्थियों को दिखा सकते हैं। विद्यार्थियों को समझना आसान हो, इसके लिए उन्हें ब्लैकबोर्ड पर भी लगा सकते हैं। आप तस्वीरों व लेखों के रूपों में आजीविका का उल्लेख करने वाले समाचार-पत्रों की मदद भी ले सकते हैं। इसी तरह की विषयवस्तु वाली दृश्य-श्रव्य सामग्रियों को विशेष आवश्यकता वाले शिक्षार्थियों के लिए भी प्रयोग किया जा सकता है। इसके आधार पर शिक्षक के मार्गदर्शन में शिक्षार्थियों द्वारा निम्नलिखित अभ्यास किए जा सकते हैं—

1. चित्र या वीडियो में जिन विभिन्न गतिविधियों या काम करते हुए लोगों को दिखाया गया है, उनके बारे में लिखें या वर्णन करें।
2. बताएँ कि कौन से कार्य खेती से संबंधित हैं और कौन से नहीं हैं।

3. अपने स्कूल या घर के पास आप जिन विभिन्न व्यवसायों को देखते हैं, अलग-अलग भाषाओं में उनके अलग-अलग नामों का पता लगाएँ।

खेती से संबंधित काम	जो खेती से संबंधित काम नहीं हैं	पुरूष/महिलाएँ/ दोनों	ग्रामीण/ शहरी	वैतनिक/अवैतनिक

उपरोक्त गतिविधि विद्यार्थियों में दृश्यों, आवाज़ों, ध्वनि-दृश्यों और वीडियो के माध्यम से अलग-अलग कौशलों को विकसित करने जैसे कि चीज़ों को पहचानने, वर्गीकृत करने, लिखने और संप्रेषित करने में मदद करेगी। इन गतिविधियों को करने से विद्यार्थी भाषायी विविधता को पहचानने और विभिन्न भाषाओं के बारे में जानने के लिए प्रोत्साहित होंगे। एक ही व्यवसाय के लिए अलग-अलग भाषाओं में अलग-अलग नाम प्रचलित हो सकते हैं। उदाहरण के लिए, लेबर कांट्रैक्टर— ठेकेदार, मेसन— मिस्त्री, राजगीर, वेज लेबर— कुली, मज़दूर आदि। शिक्षक विद्यार्थियों को विभिन्न भाषाओं में इन नामों की सूची बनाने और उन्हें एक चार्ट पेपर पर लिखकर कक्षा में दिखाने में मदद कर सकते हैं। विभिन्न मातृभाषाएँ बोलने वाले विद्यार्थी इस चार्ट का विस्तार कर सकते हैं। यह अभ्यास भाषायी विविधता के प्रति सम्मान बढ़ा सकता है।

इस बात पर गौर किया जा सकता है कि व्यापक तरीकों से आजीविका के अवसरों का वर्गीकरण भी हो सकता है। ऐसा नहीं है कि लोग केवल ऊपर वर्णित व्यवसायों या कामों को ही करते हैं। पहली बार छोटे बच्चों के लिए हम अलग-अलग इलाके के लोगों के रोज़गारों से जुड़े विवरण दे रहे हैं। इसे अगर कुछ सरल ढंग से पेश किया जाए तो बेहतर होगा।

इसके बाद ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों के व्यवसायों पर चर्चा की जा सकती है, जो आमतौर पर कृषि संबंधित कार्यों, पशुपालन और हस्तकरघा से जुड़े होते हैं।

शहरी क्षेत्रों में, लोग ज्यादातर गैर-कृषि नौकरियों से जुड़े होते हैं, मुख्य रूप से उद्योगों/ कारखानों और सरकारी नौकरियों से।

पाठ्यपुस्तक *सामाजिक और राजनीतिक जीवन* में दो अध्याय दिए गए हैं, जो पूरे देश में रोज़गार के परिदृश्य का एक विहंगम दृश्य प्रस्तुत करते हैं।

गतिविधि 2— विद्यार्थी जोड़े में अपनी कक्षा से बाहर आएँगे (इस तरह विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थी भी इसमें शामिल हो सकते हैं) और स्कूल के बाहर चारों ओर

निरीक्षण करेंगे। विभिन्न व्यवसायों में लगे लोगों के चित्र बनाएँगे और उनका विवरण लिखेंगे। इन चित्रों को विभिन्न श्रेणीवार विभाजनों के अंतर्गत कक्षा के नोटिस बोर्ड पर चिपकाया जा सकता है। यह गतिविधि शिक्षार्थियों में निर्धारण, वर्गीकरण और अवलोकन के कौशल विकसित करने में मदद कर सकती है।

यह संभव है कि ग्रामीण क्षेत्रों के बारे में बताने वाले अध्याय को शहरी क्षेत्रों/महानगरीय शहरों में पढ़ने वाले विद्यार्थी पूरी तरह से न समझ पाएँ। साथ ही ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले बच्चों के लिए भी इस बारे में कल्पना करना मुश्किल हो सकता है कि कपड़ों के कारखाने या सिले हुए कपड़ों की दुकानों और बहुमंज़िला शॉपिंग कॉम्प्लेक्स का क्या मतलब है। दोनों ही स्थितियों में, शिक्षक विद्यार्थियों के लिए इन परिदृश्यों का संदर्भ बनाने में मदद कर सकता है। इसका एक तरीका यह भी है कि कुछ ऐसे वीडियो और फ़िल्मों के अंश बच्चों को दिखाए जाएँ जिनमें खेती, मछली बाज़ार, शॉपिंग कॉम्प्लेक्स में खरीददारी करते और सामान बेचते लोग हों/या कि कपड़ा उद्योग में कैसे काम होता है, इस बारे में बताया/दिखाया गया हो।

गतिविधि 3— पाठ्यपुस्तक में उपयोग की जाने वाली वर्णन (नरेशन) तकनीक, जिसमें सक्रिय रूप से काम करते व्यक्ति हों, में सीखने के एक अन्य तरीके जो इसके पूरक की तरह काम करेगा, को जोड़ा सकता है, यानी सर्वेक्षण पद्धति या मिनी नोट बुक आधारित सर्वेक्षण—

विद्यार्थियों को अलग-अलग तरह का काम करने वाले व्यक्तियों से मिलने के लिए कहा जा सकता है। कई बच्चों के माता-पिता ये काम कर रहे होंगे। या तो बच्चों को उनके माता-पिता के कार्य का क्या स्वरूप है, इसके बारे में जानकारी इकट्ठा करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है या फिर शिक्षक निम्नलिखित विवरण एकत्र करने के लिए विद्यार्थियों का मार्गदर्शन कर सकते हैं।

1. जेंडर
2. व्यवसाय
3. व्यवसाय में क्या-क्या काम करने पड़ते हैं?
4. किस समय उन्हें घर से जाना होता है और कितने बजे वे वापस आते हैं?
5. वे काम करने की जगह पर कैसे पहुँचते हैं?
6. उन्हें एक दिन या सप्ताह या महीने में कितना वेतन दिया जाता है?
7. क्या उन्हें नियमित रूप से काम मिलता है? किस महीने में उन्हें नियमित रूप से काम मिलता है? काम नियमित क्यों नहीं है?
8. काम से होने वाली आय परिवार के लिए पर्याप्त है या नहीं?

यदि उपरोक्त प्रश्न का उत्तर 'नहीं' है, तो कमाई के और कौन-से वैकल्पिक तरीके वे अपनाते हैं? (सूची में और भी कुछ जोड़ा जा सकता है)

विभिन्न व्यवसायों में लगे लोग जिन कई समस्याओं और चुनौतियों का सामना करते हैं, उन पर इस गतिविधि के माध्यम से चर्चा होगी। सर्वेक्षण के आधार पर, शिक्षक विद्यार्थियों के

साथ उन विभिन्न मुद्दों और चुनौतियों पर भी चर्चा कर सकते हैं जिनका सामना लोग अपने जीवन में करते हैं। शिक्षक उनका ध्यान इन बातों की ओर भी खींच सकते हैं—

- शिक्षार्थियों को श्रम की गरिमा समझाने के लिए किसी विशेष व्यवसाय या क्रियाकलाप के महत्व और उद्देश्य पर;
- जेंडर के आधार पर किसी काम/क्रियाकलाप का विभाजन न हो, इस ओर;
- व्यवसायों की विविधता की ओर;
- विभिन्न व्यवसायों के बीच समानताओं एवं असमानताओं की ओर, जिन पर उन्होंने गौर किया हो;
- पुरुषों और महिलाओं को दी गई मज़दूरी में अंतर पर;

तीनों गतिविधियों के संचालन के बाद, विद्यार्थियों द्वारा एकत्र किए गए नौकरी के विवरण निम्न तालिका में लिखे जा सकते हैं।

क्षेत्र	व्यवसाय का नाम (विद्यार्थी इसे तस्वीरों, हाथ से बनाए चित्रों, छोटे सर्वेक्षणों के आधार पर भर सकते हैं)
औद्योगिक वर्गीकरण	
1. कृषि और अन्य संबद्ध गतिविधियाँ	
2. उद्योग	
3. सेवा क्षेत्र	
व्यावसायिक वर्गीकरण	
ग्रामीण क्षेत्र	
1. कृषि मज़दूर	
2. किसान	
3. गैर-कृषि कार्य	
▪ स्व-नियोजित गैर-कृषि नौकरियाँ	
▪ गैर-कृषि नौकरियों में काम पर रखे गए श्रमिक	
शहरी क्षेत्र	
1. स्व-नियोजित/नियोक्ता	
2. नियमित वेतन वाली नौकरियाँ	
3. अनियत मज़दूरी करने वाले मज़दूर	

शिक्षक सामान्य मुद्दों को भी चर्चा में समाहित कर सकता है—

- यदि आस-पड़ोस में कोई बच्चा मज़दूरी कर रहा है, तो इस पर चर्चा की जा सकती है और कक्षा में बाल श्रमिकों से काम करवाने के बारे में बच्चों के विचार जानकर उस पर भी बहस की जा सकती है। इससे संबंधित सरकारी नीतियों पर भी प्रकाश डाला जा सकता है।
- आमतौर पर पुरुष किस तरह का काम करते हैं और महिलाएँ किस तरह की गतिविधियों में संलग्न होती हैं, इस पर चर्चा हो सकती है।

- शिक्षक इस बात पर भी सवाल उठा सकते हैं कि क्यों कुछ किसानों के पास ज्यादा ज़मीन है और कई अन्य के पास केवल थोड़ी-सी ज़मीन है। शहरी इलाकों में, कुछ लोगों के अपने घर होते हैं और कई लोग किराये के मकानों में रहते हैं। कुछ परिवारों के पास ढेर सारी चल-अचल संपत्ति होती है और कुछ अन्य परिवारों के पास मामूली-सी संपत्ति होती है। हमें विवरण में जाने की आवश्यकता नहीं है। हम बच्चों को इन पर ध्यान देने का अवसर दे सकते हैं।
- शिक्षक विद्यार्थियों से कुछ दुकानों पर जाकर उसके आकार, वहाँ बिकने वाले सामान और विभिन्न प्रकार की दुकानों में प्रचलित मूल्य स्तरों के विवरण एकत्र करने को कह सकते हैं। उनसे इस तरह के सवाल किए जा सकते हैं कि कुछ लोग सड़कों पर अपना सामान क्यों बेचते हैं और क्यों कुछ लोग दुकानों में सामान बेच रहे हैं। बच्चों को अपने माता-पिता या अभिभावकों से यह जानने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है कि क्या वे एक स्थान से दूसरे स्थान पर चले गए थे, आखिर वे एक जगह छोड़कर दूसरी जगह क्यों गए, उनके दादा-दादी/नाना-नानी क्या करते हैं और अभी वे जहाँ रहते हैं, क्या उसे छोड़कर दूसरी जगह जाने में कोई बड़ा फ़ायदा है।

अभ्यास प्रश्न और उनके उद्देश्य

आजीविका का पाठ पढ़ाने के बाद शिक्षक, यह जानने के लिए कि क्या बच्चों ने व्यवसाय, मज़दूरी, लाभ, कर्ज, बाज़ार, भूमि, माल का उत्पादन, मौसम/जलवायु, ऋण, उधार लेना या देना, खेती, कारखाने, कॉल सेंटर, परिवहन और प्रवासन, जैसी शब्दावलियों को समझा है या नहीं, औपचारिक आकलन कर सकता है।

विषय पूरा करने के बाद आपको सीखने के कई प्रतिफल देखने को मिलेंगे जो स्पष्ट रूप से तो मॉड्यूल में निर्दिष्ट नहीं हैं, लेकिन सहभागी शिक्षण के माध्यम से उन्हें पाया जा सकता है। शिक्षार्थी मौखिक रूप से और शब्दों व दृश्य-सामग्रियों के माध्यम से अपनी बात कहते हैं। जब वे अपनी स्कूली गतिविधियों के एक हिस्से के रूप में अपने साथियों, पड़ोसियों और समुदाय सदस्यों से मिलते और उनसे बात करते हैं तो वे संचार कौशल भी विकसित करते हैं।

स्व-मूल्यांकन के लिए मानदंड

मैं ऐसा कर सकने में सक्षम हूँ	थोड़ा बहुत	अच्छा	बहुत अच्छा	उत्कृष्ट
मॉड्यूल और उदाहरणों का उपयोग करने और इसमें अतिरिक्त जानकारी शामिल करने में				
सामाजिक विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों को आपस में जोड़ने में				
सुझायी गई और अन्य गतिविधियों को करने में				
इसका अनुवाद शिक्षार्थियों की भाषा में करने में				
शिक्षण-अधिगम सामग्री— ऑडियो/वीडियो आदि तैयार करने में				

संदर्भ

रा.शै.अ.प्र.प. 2019. *हमारे अतीत 1*, कक्षा–छह के लिए इतिहास की पाठ्यपुस्तक. नयी दिल्ली.

——. 2017. *हमारे अतीत 2*, कक्षा–छह के लिए इतिहास की पाठ्यपुस्तक. नयी दिल्ली.

——. *मैनुअल फ़ॉर इन-सर्विस एजुकेशन ऑफ़ टीचर्स एंड टीचर एजुकेटर्स ऑफ़ सोशल साइंसेज*. अपर प्राइमरी एंड सेकेंडरी स्टेज (2017–18). डिपार्टमेंट ऑफ़ एजुकेशन इन सोशल साइंसेज, नयी दिल्ली.

——. 2017. *लर्निंग आउटकम्स एट द एलीमेंट्री स्टेज*. नयी दिल्ली.

——. 2006. सिलेबस फ़ॉर क्लासेज़ एट द एलीमेंट्री लेवल, *नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क 2005*. वॉल्यूम–1. नयी दिल्ली.

——. 2006. *सामाजिक और राजनीतिक जीवन*, कक्षा–छह के लिए पाठ्यपुस्तक. नयी दिल्ली.

——. 2006. *पृथ्वी हमारा आवास,* कक्षा–छह के लिए भूगोल की पाठ्यपुस्तक. नयी दिल्ली.

एकीकृत नमूना— बनावटी संसद/सदन की गतिविधि

- सभापति (स्पीकर) के दायीं तरफ — सत्तारूढ़ दल समूह
- सभापति के बायीं तरफ — विपक्षी दल समूह
- महत्वपूर्ण नेताओं के लिए सबसे आगे की पंक्तियों में बैठने की सीटें (सदन में उनके संख्या बल के अनुसार)
- बायीं ओर पहली पंक्ति में पहली सीट — उप-सभापति (डिप्टी स्पीकर)

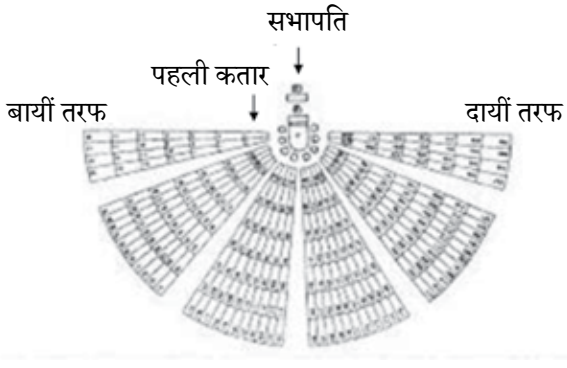

परिचय

बनावटी या कृत्रिम संसद का मंचन, अक्सर सामाजिक विज्ञान को सीखने में मददगार साबित होता है। यह सामाजिक विज्ञान को वास्तविकता का बोध देता है। शिक्षार्थी सांसदों या विधानसभा के सदस्यों की भूमिका निभा सकते हैं। बेशक वे वेशभूषा का उपयोग नहीं कर सकते हैं, लेकिन कक्षा के बैठने की व्यवस्था आदि को यथासंभव सदन के सत्रों के अनुरूप बनाया जा सकता है। इन संसदों की तैयारी के रूप में, शिक्षार्थियों के समूहों को संसद में भाग लेने वाले विभिन्न लोगों के वक्तव्य या भाषण तैयार करने की जिम्मेदारी सौंपी जानी चाहिए। कक्षा का एक पीरियड (घंटा) समूह बनाने और कौन-सा विद्यार्थी क्या भूमिका निभाएगा, इस काम के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। इसके बाद कक्षा का एक और पीरियड इस पूरी

गतिविधि का आयोजन करने के काम में लाया जा सकता है। संसद के सत्र का पूरी तरह से आयोजन करने के बाद, एक अन्य पीरियड का उपयोग इस तरह के सत्रों के आयोजन से प्राप्त की जाने वाली समझ पर कुछ निश्चित प्रश्नों के उत्तर देने के लिए होना चाहिए।

युवा शिक्षार्थियों को विभिन्न समकालीन मुद्दों और सरोकारों पर अपने विचार रखने का मौका देने के लिए शिक्षक कक्षा में एक बनावटी संसद का आयोजन कर सकता है। शिक्षार्थी एक साथ चर्चा कर सकते हैं, किसी समस्या पर विचार-विमर्श कर सकते हैं, उससे निपटने के तरीके ढूँढ़ सकते हैं और विभिन्न मुद्दों के लिए एक योजना बना सकते हैं। इस अभ्यास से शिक्षार्थियों को अपनी राय व्यक्त करने, निर्णय लेने की क्षमता को सुदृढ़ करने, दूसरों के विचारों के प्रति सहयोग और सम्मान विकसित करने और टीम में काम करने को बढ़ावा देने में मदद मिलेगी।

बनावटी संसद क्या है?

बनावटी संसद विधानसभाओं/संसद की कार्यवाहियों की मनोरंजक ढंग से की जाने वाली नकल है। भारतीय संसद ब्रिटेन की वेस्टमिंस्टर संसदीय प्रणाली पर आधारित है।

यह गतिविधि इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र और सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन के शिक्षण-अधिगम से संबंधित कुछ मुद्दों को समझने-समझाने के लिए एक उदाहरणीय एवं शैक्षिक युक्ति है। इस युक्ति का प्रयोग समाज में बेहतर सामजिक कार्यों को बढ़ावा देने के लिए भी किया जा सकता है।

लोकसभा के बारे में सामान्य जानकारी

लोकसभा हॉल में 550 सदस्यों के बैठने की व्यवस्था है। सीटों को छह ब्लॉकों में रखा गया है, जिनमें से प्रत्येक में 11 पँक्तियाँ हैं। अध्यक्ष की कुर्सी के दायीं ओर ब्लॉक नंबर 1 और बायीं ओर ब्लॉक नंबर 6 है। इन दोनों ब्लाकों में 97 सीटें हैं। शेष 4 ब्लॉकों में, प्रत्येक में 89 सीटें हैं। लोकसभा के प्रत्येक सदस्य को कक्ष में एक सीट आवंटित की जाती है। अध्यक्ष की कुर्सी के दायीं ओर की सीटों पर सत्तारूढ़ दल के सदस्य और बायीं ओर विपक्षी दलों के सदस्य बैठते हैं। उप-सभापति बायीं तरफ की पहली पँक्ति की सीट पर बैठते हैं। सीटों का आवंटन पार्टी के बहुमत के अनुसार किया जाता है, लेकिन वरिष्ठ या प्रमुख सदस्यों के मामले में, भले ही उनकी पार्टी का बहुमत कम हो या वह निर्दलीय सदस्य हों, इसे तय करना अध्यक्ष के अधिकार में भी होता है।

महत्वपूर्ण शब्द— विचार और चिंतन

लोकसभा— लोकसभा को जन समुदाय की सभा और संसद का निचला सदन भी कहा जाता है। लोकसभा के सदस्य अपने निर्वाचन क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करने के लिए सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार द्वारा चुने जाते हैं। आम चुनाव के बाद लोकसभा का गठन किया जाता

है और वह पाँच साल तक काम करती है या कि जब तक मंत्रिपरिषद की सलाह पर उसे राष्ट्रपति द्वारा भंग नहीं कर दिया जाता।

अध्यक्ष (स्पीकर)— भारत में लोकसभा का पीठासीन अधिकारी होता है।

लोकसभा का नेता— भारतीय संसद के निचली सदन का नेता। यह सामान्यत: प्रधानमंत्री ही होता है, अगर वह लोकसभा का सदस्य है तो। यदि प्रधानमंत्री संसद के निचले सदन का सदस्य नहीं है तो वह किसी अन्य मंत्री को सदन के नेता के रूप में नियुक्त कर सकता है।

विपक्ष का नेता— वह नेता जो संसद के किसी भी सदन में सरकार द्वारा चुना जाता है। इसका आधिकारिक दर्जा उस पार्टी के नेता को दिया जाता है, जिसने लोकसभा में कम-से-कम 55 सीटें (10 प्रतिशत) हासिल की हैं।

प्रश्नकाल— लोकसभा में हर दिन सत्र का पहला घंटा प्रश्नकाल होता है। प्रश्नकाल के दौरान सदस्य प्रशासन और सरकार की नीतियों के विभिन्न पहलुओं पर मंत्रियों से प्रश्न पूछ सकते हैं। प्रत्येक मंत्री जिनकी सवालों का जवाब देने की बारी आती है, वह खड़े होकर अपने विभाग के कार्यों या कमियों के लिए जवाब देता है।

शून्यकाल— प्रश्नकाल के तुरंत बाद का समय शून्यकाल के रूप में जाना जाता है, क्योंकि यह लगभग दोपहर बारह बजे से शुरू होता है। इस दौरान अध्यक्ष को पूर्वसूचित कर सदस्यगण अपने महत्वपूर्ण मुद्दे उठा सकते हैं।

मुद्दा 1

विषय— सांस्कृतिक विरासत पर जागरूकता

विपक्षी नेता— प्रश्न

क्या सरकार इस बात से अवगत है कि हमारे ऐतिहासिक स्मारक/भवन नष्ट हो रहे हैं? क्या जाने या अनजाने में किए गए विनाश और उपेक्षा को कठोर कानून बनाकर सुलझाया जा सकेगा। हमारे देश की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के बारे में आम जनता को जागरूक करने के लिए क्या किया जाना चाहिए?

मंत्री— उत्तर

हम जानते हैं कि आज हमारे ऐतिहासिक धरोहर असुरक्षित हैं। ऐतिहासिक स्थलों और स्मारकों? इमारतों को विभिन्न तरीकों से नष्ट कर दिया जाता है, जैसे कि हमारे स्मारकों की दीवारों पर कुछ भी लिख दिया जाता है या उन्हें जान-बूझकर बर्बाद किया जाता है।

हमारे पास इस संबंध में पहले से ही कई कानून हैं जैसा कि एक विद्वान ने ठीक ही कहा है कि 'ऐसी विरासतों के दुरुपयोग और बर्बादी को रोकने के लिए सिर्फ़ कानून द्वारा मोहर नहीं लगायी जा सकती, अपितु शिक्षा के माध्यम से आम जनता को जागरूक करके ही ऐसा किया जा सकता है। आज लोगों पर सबसे ज्यादा प्रभाव डालने वाले उनके बच्चे हैं जो खुद कल की आम जनता होंगे'। इन संसाधनों के बारे में बच्चों को शिक्षित करने से न केवल जनता को जागरूक करने में मदद मिलती है, बल्कि अप्रत्यक्ष रूप से माता-पिता

और अभिभावकों को भी जानकारी प्राप्त होती है और इस तरह लूटपाट एवं विनाश को कम करके उन्हें सुरक्षित करने के लिए प्रोत्साहित करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभायी जा सकती है।

हमारे बच्चों को हमारी पाठ्यपुस्तकों में विभिन्न ऐतिहासिक स्मारकों के बारे में पढ़ाया जाता है और कभी-कभी उन्हें क्षेत्र भ्रमण के लिए भी ले जाया जाता है। हम इस क्षेत्र में शुरू किए गए धरोहर सप्ताह के दौरान कुछ काम कर रहे हैं, लेकिन इससे आगे उन्हें जानकारी देने, जागरूक करने और अपनी समृद्ध विरासत की चर्चा से युवा पीढ़ी को सशक्त बनाने के मामले में अधिक सफलता नहीं प्राप्त हुई है। ए.एस.आई. और विभिन्न संग्रहालय विद्यार्थियों को हमारी विरासत के प्रति जागरूक और संवेदनशील बनाने के लिए कुछ कार्यक्रम आयोजित करते हैं, परंतु ये नाममात्र के, अनियमित और थोड़े-से प्रयास उन विद्यार्थियों के हिसाब से अधूरे हैं जो अपनी सांस्कृतिक विरासत के बारे में जानना चाहते हैं और इसके रख-रखाव व संरक्षण के प्रति संवेदनशील हैं। संग्रहालयों, शैक्षिक संस्थानों, नागरिक समूहों और सरकार को इस मुद्दे पर एक साथ काम करने की आवश्यकता है क्योंकि अधूरे प्रयास जागरूकता पैदा करने में सक्षम नहीं हैं।

सभी लाभार्थियों को हमारी धरोहरों के विषय में शिक्षा देने की दिशा में मिल-जुलकर सहयोग करते हुए सक्रिय रूप से महत्वपूर्ण भूमिका निभाने की ज़रूरत है। धरोहर शिक्षा को बच्चों की सीखने की प्रक्रिया का एक अभिन्न अंग बनाना चाहिए। इस तरह न केवल विद्यार्थियों को इतिहास और समाज को समझने में मदद मिलेगी, बल्कि उनमें सम्मान एवं आदर का भाव भी पैदा होगा और वे आने वाली पीढ़ियों के लिए हमारी विरासत को सुरक्षित रखने का विशेष प्रयास करेंगे।

मुद्दा 2

विषय— वन आच्छादन (फॉरेस्ट कवर) से जुड़े सरोकार

विपक्षी नेता— प्रश्न

क्या भारत सरकार ने भारत में वन आच्छादन बढ़ाने के लिए कोई पहल की है?
यदि हाँ, तो सरकार द्वारा क्या प्रयास किए गए हैं?

मंत्री— उत्तर (पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय)

भारत में वन आच्छादन बढ़ाने के लिए, राष्ट्रीय वनारोपण कार्यक्रम (एन.ए.पी.)और ग्रीन इंडिया मिशन (जी.आई.एम.) जैसी विभिन्न केंद्र प्रायोजित योजनाओं के अंतर्गत जंगल लगाने का कार्य किया जा रहा है। इन योजनाओं को पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा लागू किया गया है। जी.आई.एम. का लक्ष्य भारत के वन क्षेत्र के संरक्षण, पुनर्स्थापन एवं संवर्द्धन के साथ ही जलवायु परिवर्तन पर कार्य करना है। एन.ए.पी. ऐसी योजना है जिसमें लोगों के माध्यम से वृक्षारोपण किया जाता है। विभिन्न वनारोपण कार्यक्रमों के कारण ही देश में वन और वृक्षों के आच्छादन में वृद्धि हुई है।

मुद्दा 3

विषय— कृषि

प्रश्न— क्या अन्य देशों की तुलना में हमारे देश में कृषि उत्पादन कम है? यदि ऐसा है तो कृपया विवरण उपलब्ध कराएँ।

उत्तर— भारत में कृषि क्षेत्र में विभिन्न फसलों का उत्पादन कई देशों की तुलना में अधिक है। भारत ने विभिन्न फसलों के उत्पादन के बढ़ते स्तर में उल्लेखनीय प्रगति की है, जो पिछले पाँच दशकों के दौरान तीन गुना तक बढ़ गयी है। कृषि उत्पादकता में वृद्धि के कारण मुख्य रूप से कुल 275.68 करोड़ टन का खाद्यान्न उत्पादन हुआ है। इसने न केवल किसानों को समृद्धि प्रदान कर उनके जीवन में सुधार किया है, वरन् हमारे देश की खाद्य एवं पोषण सुरक्षा भी सुनिश्चित की है।

प्रश्न— क्या महिला किसानों को पहचान पत्र प्रदान करने का प्रस्ताव है, ताकि उन्हें स्वतंत्र किसानों के रूप में मान्यता दी जा सके? यदि ऐसा है तो कृपया विवरण उपलब्ध कराएँ।

उत्तर— 2011 में की गई भारत की जनगणना में महिला किसानों को पहले से ही खेतिहरों के रूप में मान्यता दे दी गई है। उन्हें शामिल किया जा चुका है और विधिवत रूप से खेतिहरों की कुल संख्या में वे मौजूद हैं। सरकार के पास महिला किसानों को अलग पहचान पत्र प्रदान करने का कोई प्रस्ताव नहीं है।

शिक्षार्थी सत्तारूढ़ दल और विपक्षी दल के समूह बना सकते हैं, जिसमें विपक्षी दल का एक सदस्य इन प्रश्नों को उठाएगा और सत्तारूढ़ दल के सदस्य इसका उत्तर देंगे और हर कोई चर्चा में भाग लेगा। शिक्षक, शिक्षार्थियों के ज्ञान और मुद्दों के बारे में उनकी समझ, विचारों को रखने की उनकी क्षमता और उनके बीच के आपसी सहयोग का निरीक्षण और विश्लेषण कर सकते हैं।